ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

धर्म रक्षा हेतु भाई मनी सिंह जी द्वारा अपने प्राणों की आहुति

सिक्ख इतिहास, भाग-दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंह

क्रांतिकारी जगत गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Websie:www.sikhworld.info

or

Websie:www.sikhhistory.in

नोट : यहां दी गई सारी जानकारी लेखक के अपने निजी विचार हैं। यह जरूरी नहीं कि सभी लेखक के विचारों से सहमत हों।

धर्म रक्षा हेतु भाई मनी सिंह जी द्वारा अपने प्राणों की आहुति

हम पिछले अध्यायों में पढ़ चुके हैं कि भाई मनी सिंह जी के योग्य नेतृत्त्व में विपतिकाल में सिक्खों की आपसी फूट को समाप्त होकर एकता में बंध गए थे । इस प्रकार सिक्खों को संगठित होकर सुदृढ़ होने का शुभ अवसर मिल गया । सिक्खों का पर्वो पर श्री दरबार सिंह एकत्रित होना सत्ताधारियों को एक आँख नहीं भाता था । दीवाली व वैशाखी के खालसे के सम्मेलनों में वे अपनी मृत्यु छिपी देखते थे । भाई मनी सिंह जी अमृत प्रचार करके सिक्खों की संख्या बढ़ा रहे थे । यह भाई मनीसिंह जी का प्रचार ही था, जिसने सिक्ख पंथ को कमजोर नहीं होने दिया, जबकि पँजाब का राज्यपाल अब्दुलसमद खान व उसका उत्तराधिकारी जक्रियाखान कई प्रकार की विभिन्न विभिन्न नीतियों के अन्तर्गत सिक्खों को समाप्त करने की योजनाओं को आजमा कर देख चुके थे। इन लोगों के अत्याचारों के कारण कई वर्षो से अमृतसर में सिक्खों के सम्मेलन होने बन्द हो चुके थे । इस प्रकार इन दिनों सिक्खी प्रचार धीमी प्रगति परथा । सन् 1738 ईस्वी के दीवाली पर्व पर भाई मनी सिंह के मन में आया कि जब से खालसा पंथ की जागीर जब्त हुई है, तब से अमृतसर नगर में सिक्खों का आना जाना लगभग समाप्त ही हो गया है । क्या ही अच्छा हो जो फिर से प्रशासन से कोई नई संधि कर ली जाये और एक बार फिर दीवाली पूर्व पर विशाल सम्मेलन का आयोजन किया जा सके । इस बात को उन्होंने अन्य प्रमुख सिंहों को बताया और उनसे परामर्श किया । सभी आपके विचारों से सहमति प्रकट करने लगे । अब समस्या यह थी कि बात को किस प्रकार प्रशासन के समक्ष रखा जाए । इस पर उनको ध्यान आया कि क्यों ना हम लाहौर निवासी सरदार सुबेग सिंह तथा सरदार सूरत सिंह आदि को अपना वकील बनाकर अपना प्रस्ताव सरकार के आगे रखें । ऐ ही किया गया । सुबेग सिंह जी नेभाई मनी सिंह की तरफ से राज्यपाल जक्रिया खान को विश्वास दिलाया कि वह साक्षी रहेंगे, सम्मेलन में किसी प्रकार का उत्पात नहीं होगा । दीवाली सम्मलेन की प्रशासन ने अनुमति प्रदान करें । इस पर जक्रिया खान ने पाँच हजार रूपये कर के रूप में माँगे जो कि भाई मनी सिंह ने देने स्वीकार कर लिये । यह मेला दस दिन तक

चलना था । भाई मनीसिंह जी का विचार था कि इस सम्मेलन में 'पंथ' की चढ़दी कला कैसे हो और बिखरे हुए सिक्खों को एक दूसरे की समस्याओं से अवगत करवाया जा सके । इन विचारों को पंथ तक पहुँचने का यह सम्मेलन और उसका मंच बहुत सहायक सिद्ध होगा ।

दूर-दराज के सिंहों को अमृतसर में एकत्रित होने के लिए भाई मनी सिंह जी ने संदेश भेजे और प्रशासन से नई संधि के विषय में भी लिखा, परन्तु दूसरी तरफ लाहौर में सिक्ख पंथ के विद्रोही (शत्रु) हरिभगत निरंजनिया, छीने क्षेत्र का कर्ण तथा अन्य मुखबरों ने राज्यपाल को बहका दिया और उसे कहा कि सिक्खों को एक ही बार में समाप्त करने का इससे अच्छा अवसर और नहीं मिलने वाला है, अत: जब सब सिक्ख इक्ट्ठे हों, उन पर अकस्मात् आक्रमण कर देना चाहिए । यह बात जक्रिया खान को पसन्द आ गई । उसने अपनी नीति बदनीति में बदल ली और वह सिक्खों को जाल में फँसा शिकार समझने लगा । जक्रिया खान ने दीवान लखपतराय को एक षड्यन्त्र रचने को कहा कि अमृतसर में सिक्खों को एक ही बार में समाप्त कर दिया जाए । लखपत राय ने दीवाली वाल रात को सिक्खों को घेर कर तोपों से उड़ा देने की योजना बनाई, जिससे निर्दोष सिक्ख तीर्थयात्रियों का कत्लेआम सहज में किया जा सके ।

लाहौर में जक्रिया खान जब षड्यन्त्र रच रहा था, तभी स्थानीय सहजधारी सिक्खों को सैनिक गतिविधियों से सन्देह हुआ । उन्होंने भेदियों द्वारा सच्चाई जान ली और तुरन्त भाई मनी सिंह जी को प्रशासन की बेइमानी की सूचना भेजी । भाई मनी सिंह जी को अपनी भूल का अहसास हुआ और उन्होंने तुरन्त सतर्कता का परिचय देते हुए तुरन्त बहुत से पत्र लिखकर समस्त सिक्ख संगत को सावधान कर दिया और कहा कि सत्ताधारी बेइमानी पर उतर आये हैं, इस लिए कोई भी अमृतसर आने का कष्ट न करें । यदि कोई आना ही चाहता है तो वृद्ध, स्त्रियाँ, बच्चे और बीमार व्यक्तियों को साथ न लाये । जो भी आये, वह युद्ध लड़ने की सम्भावना को मद्देनजर रखकर तैयार होकर आये । यह पत्र सभी दर्शनार्थियों तक नहीं पहुँच सके । अत: कुछ रास्ते में पहुँच गये थे, वे षड्यन्त्रकारियों द्वारा घेर लिये गये और उनके सैनिकों द्वारा मार दिये गये किन्तु कुछ युवक सिक्ख दलों को इस षड्यन्त्रकारियों की भनक मिल गई थी और वह निर्दोष संगत की सुरक्षा हेतु अपनी सेवाएं

देने आ पहुँचे । बस फिर क्या था, उन्होंने मुगल सैनिकों पर गोरीले धावे बोल दिये और उनका ध्यान अपनी ओर खींचकर जन साधारण की जान बचाने का प्रयत्न किया । जिस में वे किसी हद तक सफल भी हो गए । इस रक्तपात के कारण सम्मेलन हो ही नहीं सका। सब कार्यक्रम विफल हो गये । जब मेला भय के वातावरण में नहीं लगा तो चढ़ावा भी नहीं आया । परन्तु जक्रिया खान ने भाई मनी सिंह जी से 5,000/– रूपये कर के रूप में जमा करवाने के लिए कहा । इस पर भाई मनीसिंह जी ने सत्ताधारियों को निर्दोष संगत का हत्यारा बताते हुए, उन पर आरोप लगाया कि वे सभी षड्यन्त्रकारी हैं और छलकपट की राजनीति करते हैं । जब तुम्हारी बदनियत के कारण मेला लगा ही नहीं तो कर किस बात का जमा करवाया जाये ।

जक्रियाखान और उसकी चखल चौकड़ी अति नीचता पर उतर आई । उन्होंने भाई मनी सिंह जी को उनके सहयोगियों सहित गिरफ्तार कर लिया और उन्हें लाहौर लाया गया । भाई मनी सिंह जी पर पाँच हजार रूपये जमा न करवाने का आरोप लगाया गया । उत्तर में भाई मनी सिंह जी ने कहा कि जब चढ़ावा चढ़ा ही नहीं तो इस धनराशि को कैसे चुकता किया जा सकता है? इस पर उलटा काज़ी ने फतवा (आरोप) सुनाया, तुम तयशुदा कर (टैक्स) की रकम अदा नहीं कर पाये, इसलिए तुम्हें इस्लाम स्वीकार करना पड़ेगा अन्यथा तुम्हें मृत्युदण्ड दिया जायेगा । उत्तर में भाई मनी सिंह जी ने कहा – जैसे कि मैं पहले बता चुका हूँ, यदि तुम लोग बेइमानी न करते तो मैंने यह राशि तुरन्त जमा करवा देनी थी, परन्तु अब मैं बेइमानों को कुछ भी देने को तैयार नहीं हूँ, रही बात इस्लाम स्वीकारने की, तो मैं मृत्यु को सहज में स्वीकार कर सकता हूँ, किन्तु इस्लाम नहीं । इस पर काज़ी ने कहा – इन्हें मार कर छोटे छोटे टुकड़े कर दिये जायें अर्थात बन्द बन्द करके मृत्यु दण्ड दिया जाये ।

कुछ स्थानीय सहजधारी सिक्खों ने भाई मनी सिंह जी से कहा कि आप चिन्ता न करें, हम यह पाँच हजार की राशि सरकारी खजानें में जमा करवा देते हैं, परन्तु भाई मनी सिंह जी, इसके लिए सहमत न हुए। उनका कहना था कि यह शरीर तो नश्वर है, इसने आज नहीं तो कल नष्ट होना ही है । अत: यही उचित समय है । उन्होंने कहा – मैं सिक्खी का गौरव बढ़ाने हेतु ऐसे कई जीवन इस पर न्यौछावर कर सकता हूँ ।

भाई मनी सिंह जी को जल्लादों के हाथों सौंप दिया गया । वह भाई जी को लाहौर नगर के नरवास चौक लाये ताकि जनसाधारण को भयभीत किया जा सके कि हम सिक्ख लोगों को कितना कठोर मृत्युदण्ड देते हैं, जिससे फिर कोई सिंह न सजे । इस प्रकार उनके अन्य सहयोगियों को भी विभिन्न प्रकार की यातनाएं देकर मृत्युदण्ड देने की घोषणा की गई । इनमें थे भाई दीवान सिंह जी तथा श्री गुजार सिंह जी ।

लाहौर किले के बाहर नरवास चौक में जब तमाशा देखने वालों की भीड़ इक्ट्ठी हो गई, तब जल्लाद ने भाई मनी सिंह जी का हाथ और बाजू काटने का प्रयास किया, परन्तु भाई जी ने उसे टोका और कहा - तुम्हें हुक्म है, मेरी बोटी बोटी करके काटो, तुम वैसा ही करो । जल्लाद आश्चर्य में आपजी का मुँह ताकने लगा और उसने भाई जी से पूछा कि क्या आप को पीड़ा का अहसास नहीं । उत्तर में भाई जी ने कहा - हमने स्वयं को साध लिया है, अत: इस शरीर रूपी ठीकरें (मिट्टी के टूटे हुए बर्तन) को प्रभु चरणों में अपिर्त करना है । इस प्रकार देखते ही देखते जल्लाद ने भाई जी के शरीर के बन्द बन्द काट कर उनको शहीद कर दिया और वह प्रभु चरणों में जा विराजे । भाई मनी सिंह जी की शहादत 14 जून, 1738 ईस्वी तदानुसार आषाढ़ शुक्ल पक्ष पंचमी संवत 1725 को हुई । इस दुखांत घटना के पश्चात् सिक्खों के हृदय में बेइमान मुगल हाकिमों के प्रति घृणा और प्रतिशोध की भावना बहुत बढ़ गई । वे सदैव बदले की भावना से उन दुष्टों की खोज में रहने लगे, जिनका हाथ भाई मनी सिंह जी के शहीद करने में था ।

भाई काहन सिंह नावा द्वारा रचित महान कोष अनुसारभाई मनी सिंह जी का जन्म सन् 16 64 ईस्वी में कैवोवाल ग्राम के निवासी दुल्लट जाट चौधरी काले के यहाँ हुआ । जब आप 5 वर्ष के थे तो आपके माता पिता ने आपको श्री गुरू तेगबहादुर की गोदी में डाल दिया । आपकी शिक्षा दीक्षा गुरूदेव जी की छत्रछाया में चक नानकी (आनंदपुर) में हुई । आप जी ने श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी से सन् 169 9 में अमृत धारण किया ।

भाई मनी सिंह जी का धर्मनिरपेक्ष व्यक्तित्त्व

जब पँजाब प्रान्त के राज्यपाल जक्रिया खान ने समस्त सिक्खों को विद्रोही घोषित कर दिया तो मुगल सेना की टुकड़ियां सिक्खों का पीछा करती हुई दरबार साहब (अमृतसर) भी पहुँच जाती । किन्तु जब उनका सामना भाई मनी सिंह जी से होता तो वह ठंडे पड़ जाते । भाई जी उनका स्वागत करते और अपनी मीठी वाणी में उनको दरबार साहब की धर्मनिरपेक्ष रचना के विषय में विस्तार से बताते और उनको गुरूवाणी में से कुछ विशेष पद सुनाते, जिनके सुनने मात्र से उनका हृदय परिवर्तन हो जाता, वे जाते समय कुछ लंगर इत्यादि के लिए भेंट दे जाते और कहते कि हमें तो झूठ बोलकर बहकाया गया है ।

समाप्त